वर्ष : 9 • अंक : 34 • अक्टूबर-दिसम्बर 2022 • ISSN 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

विशेष सूचना :

विचार की प्रतिबद्धता में राष्ट्रहित सर्वोपरि है।

रूपेश कुमार चौहान
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।
दूरभाष संख्या-09555222747, 9267944100, 9555666907
Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vsirj.com

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख **हिन्दी अथवा संस्कृत भाषा में** न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 3500 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'वाक् सुधा'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की उद्भावना स्पष्टत: नहीं है। अत: इसके लिए शोध-लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* **आगामी अङ्क में प्रकाशनार्थ लेख आमंत्रित हैं। यदि आप लेख टाइप करा कर भेजने में असमर्थ हैं तो हस्तलिखित प्रति पत्रिका में दिये गये पत्र-व्यवहार के पते पर भेज दें।**
* प्रत्येक अङ्क पत्रिका की वेबसाइट पर अध्ययन हेतु उपलब्ध रहता है।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**
* **पत्रिका का वितरण नि:शुल्क किया जाता है एवं विशेष अनुदान के लिए किसी पर कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रकाशन के लिए कोई भी आवश्यक शुल्क नहीं है।**

*** शोध-पत्र हमारी विशेषज्ञ समीक्षा समिति (Peer Reviewed Committee) के द्वारा द्वि-स्तरीय समीक्षित होकर प्रकाशन हेतु स्वीकृत किया जाता है।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित : रूपेश कुमार चौहान

ISSN : 2347-6605

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'वाक् सुधा'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

विशेष सूचना : शोध पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिए गये तथ्यों और इनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद का पूर्ण दायित्व लेखक का होगा, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक एवं पत्रिका से सम्बन्धित अन्य किसी भी व्यक्ति का नहीं। प्रेषित स्पष्टीकरण अवश्य प्रकाशित किया जायेगा।

सलाहकार परिषद् :

- **डॉ. एम.एस. चौहान**
(निदेशक, राष्ट्रीय डेयरी शोध संस्थान, करनाल, हरियाणा)
- **प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय**
(पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)
- **प्रो. मदन मोहन अग्रवाल**
(पूर्व कला संकाय अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री**
(पूर्व उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
- **प्रो. गिरीश चन्द्र पंत**
(अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली)
- **प्रो. रामनाथ झा**
(संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. राजवीर शर्मा**
(पूर्व प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **प्रो. शम्स-उल-इस्लाम**
(प्रधानाचार्य, गया कॉलेज, गया, बिहार)
- **प्रो. राम सरेख सिंह**
(पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **प्रो. पवन अग्रवाल**
(हिन्दी एवं आधुनिक भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. मोहम्मद मंसूर आलम**
(अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया)
- **प्रो. आभा त्रिवेदी**
(पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. कमला उपाध्याय**
(विभागाध्यक्षा, संस्कृत, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **प्रो. रसाल सिंह**
(प्रोफेसर, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू)
- **डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर**
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी एवं प्रसिद्ध दलित चिंतक)
- **डॉ. विक्रमादित्य राय**
(अध्यक्ष, समाज-शास्त्र विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, (बी.एच.यू.) वाराणसी
- **प्रो. राजेश रंजन**
(पालि विभाग, नालन्दा नव-महाविहार)
- **प्रो. सत्यदेव पोद्दार**
(इतिहास विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **प्रो. काशीनाथ जेना**
(राजनीति-शास्त्र विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **प्रो. मनीष सिन्हा**
(अध्यक्ष, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **डॉ. एम. रहमतुल्लाह**
(कंसल्टिंग एडिटर, दूरदर्शन न्यूज, भारत सरकार)

Editor
Dr. Rupesh Kumar Chauhan
M.A., M.Phil., Ph.D. (Sanskrit),
M.A. (History)
Mob : 9555222747, 9540468787,
9267944100

Executive Editior
Dr. Pramod Kumar Singh
M.A., Ph.D. (Sanskrit), M.A. (Philosophy)
Gold Medalist
Assistant Professor,
Department of Sanskrit, Maitreyi College,
University of Delhi
Mob : 9717189242

Sub.- Editor
Dr. Rajesh Kumar
M.A., M.Phil., Ph.D. (Sanskrit),
Asst. Prof., Department of Sanskrit
PGDAV College, University of Delhi
Mob. 9555666907, 9891526584

Co- Editor
Abhishek Priyadarshi
M.A., Ph.D. (History),
Asst. Prof., History Department
Satyawati College, University of Delhi
Mob. 9971656921

Legal Advisor :
Arun Kumar Shukla
LL.B., LL.M., D.U.
Mob. : 7011474039, 9650088311

Managing Editor
Thakur Prasad Chaubey
Mob. : 9810636082

Office Addresses :
Head Office (Delhi) :
Dharam Pal
I-11, Usha Kiran Building, Commercial Complex, Azadpur, ***Delhi-****110033*
Mob : 9267944100

Branch Office (Bihar) :
Prof. D.S. Chauhan
C/o Late Bindeshwari Singh, Jaiprakash Nagar, Gewal Bigha,
Gaya-*823001*
Mob. : 9263078395

Branch Office (International) :
• Mrs Kirthee Devi Ramjatton
Impasse Bois Cheri, Bois Cheri Road,
Moka- 80804 Mauritius
Email: kdramjatton@yahoo.com
Contact no.: +230 57882178

Correspondence Address :
B-11/39, MIG Flats, Near DDA Market,
Sector 18, Rohini, Delhi-110089
Mob : 9555222747
www.vsirj.com

Designer :
Kawal Malik, J.D. Computers
Mob. : 9818455819

सम्पादक मंडल :

- **डॉ. वी.के. यादव**
(एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. शाहिद तस्लीम**
(असिस्टेंट प्रोफेसर, उज्बेक भाषा विशेषज्ञ, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली)
- **डॉ. कृष्ण लाल**
(सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अरविन्दो कॉलेज (प्रातः), दिल्ली)
- **डॉ. शंकर नाथ तिवारी**
(असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **प्रो. गिरिधर गोपाल शर्मा**
(प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रातः), दिल्ली)
- **प्रो. दिलीप कुमार झा**
(प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रातः), दिल्ली)
- **डॉ. जितेन्द्र कुमार**
(असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, अनुग्रह नारायण स्मारक महाविद्यालय, मगध विश्वविद्यालय)
- **डॉ. देवेन्द्र नाथ ओझा**
(असिस्टेंट प्रोफेसर, एमिटी इंस्टीट्यूट फॉर संस्कृत स्टडीज, एण्ड रिसर्च, एमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा)
- **डॉ. राजमोहिनी सागर**
(एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. वी.के. तोमर**
(एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. चंद्रशेखर पासवान**
(बौद्ध अध्ययन एवं सभ्यता विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा)
- **डॉ. के.के. झा**
(सीनियर लेक्चरर, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मोका, मॉरिशस)
- **डॉ. सुधीर कुमार सिंह**
(राजनीति विभाग, दयाल सिंह कॉलेज (प्रातः), दिल्ली)
- **प्रो. सुभाष कुमार सिंह**
(प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली)
- **प्रो. चन्द्रशेखर राम**
(प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. नन्दिनी सहाय**
(समाज-कार्य, एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा)
- **Mrs. Kirthee Devi Ramjatton**
(Lecturer, Department of Sanskrit, School of Indological Studies, Mahatma Gandhi Institute, Moka - 80808 Mauritius)
- **डॉ. कुमारी शुभ्रा**
(प्रख्यात लेखिका एवं साहित्यकार, दिल्ली)
- **डॉ. लालजी**
(एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

संरक्षक :

प्रो. मदन मोहन अग्रवाल
पूर्व अध्यक्ष एवं संकाय अध्यक्ष,
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. दलवीर सिंह चौहान
पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार

प्रो. राजवीर शर्मा
पूर्व उपाचार्य, राजनीति शास्त्र विभाग,
आत्माराम सनातन धर्म महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय ..... ***viii***

पंत, पल्लव और छायावाद 1
त्रिपुरारी कुमार / गौरव त्रिपाठी

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना का स्वरूप 6
सौम्या राय / उत्तम कुमार

मध्यकालीन भारत के भावनात्मक समन्वय में सन्त एवं भक्त कवियों का योगदान 9
अंकित कुमार राय

अथर्ववेद में व्रात्य देवता का स्वरूप 13
मिठुन सरकार

स्वतंत्रता संग्राम की अवधि में कर्पूरी ठाकुर द्वारा दलितोद्धार 17
रंजना कुमारी

त्रिलोचन के काव्य में मानवीय संवेदना 22
डॉ. दीप्ति गौड़

वैदिक आख्यानों का स्वरूप और विशेषताएँ 25
मन्टु सरकार

संविधान में भाषायी, शैक्षिक व सांस्कृतिक कर्त्तव्य 29
कमल स्वरूप श्रीवास्तव / दीप नारायण श्रीवास्तव

कौटिलीय अर्थशास्त्र में निर्दिष्ट शोधपद्धति का वैशिष्ट्य एवं समसामयिक सन्दर्भ 34
प्रो. ब्रजेश कुमार पाण्डेय / आलोक कुमार झा

'पल्टू बाबू रोड' रेणु का बीहड़ कथालोक 42
डॉ. अरविन्द कुमार सम्बल

औद्योगीकरण का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव और रंगभूमि उपन्यास 46
कशिश सिंघल

गाँधी चिन्तन में महिलाओं की स्थिति 50
डॉ. रवि प्रकाश शर्मा

'ग्लोबल गाँव का देवता' में आदिवासी समाज ... 57
सत्य देव

श्रुते:प्रत्यक्षात्प्राबल्यप्रयोजकविचार: 63
मञ्जेश एम्

शिलावत् और शिलावहा 66
डॉ. सुषमा चौधरी

मंजुल भगत की कहानियों में पारिवारिक चित्रण .. 69
प्रा. डा. आनंद गुलाबराव खरात

कामायनी में आधुनिकता 73
रेणु बाला

'जिंदगी और गुलाब के फूल' तथा 'वापसी' कहानी में अर्थोपार्जन और अकेलापन 78
पूनम सिंह तोमर

'जूठन' में व्यक्त सरनेम की समस्या 82
सोनम

महावीरचरितम् में वर्णित राम कथा की समीक्षा ... 87
डॉ. सुनीता सैनी

'मतवाला' पूर्व निराला का साहित्य 92
मो. सुहैल खाँ

जैन व्याकरण ग्रन्थों में आधार की अवधारणा 100
सोनू

वर्तमान में बालश्रम संबंधित कानूनों में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान 103
डॉ. सिवेन्द्र कुमार

पाठानुसंधान की अवधारणा : बिहारी-रत्नाकर के विशेष संदर्भ में 106
अर्पणा सिंह

स्वयं प्रकाश के साहित्य में सामाजिक यथार्थ 112
प्रियंका शर्मा

उषा प्रियंवदा की कहानियों में परिवर्तित होते जीवन मूल्य 116
मनीषा चौधरी

तस्वीर जो दिखाई नहीं जाती - एक देश बारह दुनिया 120
रेनू

'कबीर' की विभिन्न छवियाँ 123
हेमंत कुमार

संत कवियों के काव्य में समभाव 126
लवलेश कुमार

मछुआरा जीवन की त्रासदी : तितास एक नदी का नाम 131
डॉ. कपिलदेव प्रसाद निषाद

हिंदी यात्रा-साहित्य में अभिव्यक्त नागालैंड की समाज और संस्कृति 137
साधना कुमारी

हिंदी वेबसीरीज का ऐतिहासिक विश्लेषण 139
अंचल कुमार
बुद्ध काल की अर्थव्यवस्था एवं समाज 143
अविनाश कुमार
दलित साहित्य की अवधारणा : एक विवेचन..... 147
डॉ. अमित कुमार
छायावाद पूर्व-युग में हिंदी आलोचना के आयाम.. 151
डॉ. सीमा माहेश्वरी
आयुर्वेद में शरीर, मन एवं आत्मा का सम्बन्ध. 156
डॉ. अजित कुमार
भौगोलिक नियोजन, वनस्पति आदि :
केशवदास के काव्य के सन्दर्भ में..... 165
डॉ. चन्द्रविजय सिंह / डॉ. संदीप कुमारी मिश्रा
धूमिल की कविता 170
दीपक कुमार भृगुवंशी
लियोनार्ड ब्लूमफील्ड का भाषा चिंतन..... 176
सुदेश कुमार
श्रीमद्भगवद्गीता की मनोवैज्ञानिक प्रासंगिकता... 181
प्रो. स्मिता जायसवाल
निराला का काव्य चिंतन और भाषा शैली 185
डॉ. संजीत कुमार गुप्ता
हिंदी कथा साहित्य में बुद्ध का अभिग्रहण..... 192
विशाल
गोदान में स्त्री अस्मिता 198
काजल
'सलाम' दलित विद्रोह की अभिव्यक्ति
का स्वर 201
राजमणि तिवारी
सहज प्रकाश की समीक्षा..... 206
डॉ. विकेश कुमार मीणा
जलवायु परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन पर
अंतर्सरकारी दल (आईपीसीसी) का प्रतिवेदन... 208
जसराज सिंह
गिरिराज किशोर : समकालीन सामाजिक
स्थितियाँ और कथा साहित्य..... 214
कोमल
साहित्याभिव्यक्तियाँ वाया सोशल मीडिया 217
डॉ. बन्ना राम मीना
प्राचीन भारतीय संस्कृति की पारिस्थितिकीय
व्यवस्था 222
डॉ. किशोर कुमार / शशि कान्त मौर्य
भारत में नारी-चेतना और मन्नू भंडारी का
कथा-साहित्य..... 225
दीपिका त्रिपाठी
अलवर शहर में भूमि उपयोग एवं प्रबंधन..... 228
परमेश चन्द्र
मुक्तिबोध की आलोचना-दृष्टि : नयी कविता
के संदर्भ में 233
डॉ. इन्दू कुमारी

सम्पादकीय

15 अगस्त 2022 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को सम्बोधित करते हुए भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए 'पंच प्रण' लेने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री मोदी ने अगले 25 वर्षों का संकल्प देश के सामने रखा। जब 2047 में देश आजादी का 100वां वर्ष मनाएगा तब स्वतंत्रता सेनानियों के सारे सपने पूरे होने चाहिए। हालांकि इस दिशा में कार्य पहले से चल रहा है परन्तु सैद्धांतिक रूप से यह प्रतिज्ञा भले ही लालकिले से प्रधानमंत्री ने दी परन्तु व्यवहारिक रूप से यह बहुत पहले से चल रही है। अब एक सहज जिज्ञासा यह होगी कि विकसित भारत के क्या मानक हैं?

विकसित भारत में स्वच्छता होनी चाहिए, खुले में शौच से मुक्ति हो, टीकाकरण हो, हर घर में नल, जल और बिजली का कनेक्शन हो, महिलाओं का सम्मान हो, गुलामी से मुक्ति का विचार हो, देश में एकता और एकजुटता हो इत्यादि। यह सब बातें नई नहीं हैं। किसान की आमदनी बढ़ाने से लेकर हर खेतों को पानी समुचित मात्रा में मिले इसका प्रबंध भी विकसित भारत में जरूरी है। प्रधानमंत्री के जो पांच संकल्प हैं उसको हमने आवरण पृष्ठ पर भी दिया है फिर भी यहां इनकी चर्चा कर रहा हूँ।

पहला प्रण है विकसित भारत जिससे कम कुछ भी नहीं चलेगा। दूसरा प्रण है गुलामी की मानसिकता को छोड़ना, तीसरा प्रण है भारत की विरासत पर गर्व करना और चौथा प्रण है देश की एकता और अखण्डता को मजबूत करना और पांचवां और अंतिम प्रण है नागरिकों द्वारा कर्तव्य पालन। जब तक इन पांचों संकल्पों को पूरा नहीं करेंगे तब तक भारत विश्वगुरु के गौरवशाली अतीत को नहीं पा सकता है। यह कोई अलौकिक सिद्धांत नहीं है और न ही भारी-भरकम सरकारी अभियान। पंच प्रण की सिद्धि के लिए देश के हरेक नागरिक को प्रयास करना पड़ेगा। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ही काफी है। विश्वास न हो तो एक बार फिर से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पढ़िए। कहने का तात्पर्य यह है कि यह पंच प्रण अगले 25 वर्षों तक विमर्श के केंद्र में रहेंगे, इसलिए वाक् सुधा में भी इससे संबंधित आलेख प्रकाशित होते रहेंगे। इधर यूजीसी के सचिव रजनीश जैन ने भी तमाम विश्वविद्यालयों को पत्र लिखकर कहा है कि–यह समय की मांग है कि मानव केंद्रित सामूहिक प्रयास और स्थाई विकास के लिए स्वतंत्र कदमों के जरिए धरती के समक्ष मौजूद चुनौतियों का समाधान किया जाए। सभी उच्च शिक्षा संस्थानों से अनुरोध किया गया है कि पंच प्रण और लाइफ आंदोलन को उच्च शिक्षण संस्थानों में आत्मसात करने के तरीकों पर काम करें। इसलिए मुझे लगता है कि पंच प्रण को साकार रूप देने के लिए शिक्षा का क्षेत्र निर्णायक भूमिका निभा सकता है। मैकाले के मायाजाल से मुक्त होते ही हम सभी अपने पारिवारिक मूल्यों, विरासत एवं आदर्शों का पालन करते हुए अपनी जड़ों की ओर वापस लौटने लगेंगे। इसलिए एक वाक्य में कहूँ तो पंच प्रण हमारे दैनिक जीवन में भी हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

अंत में दो महत्वपूर्ण बातों की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। पहली बात यह कि युवा शोधार्थियों को जब जरूरत होती है तभी वह शोध आलेख लिखते हैं। ऐसे युवा मित्रों से आग्रह है कि वर्ष में एकाध शोध आलेख लिखते रहें, जिससे जरूरत के समय अफरातफरी से बच सकें। दूसरी बात यह कि वाक् सुधा आप सभी के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित होती है। आप सबका आर्थिक सहयोग अमूल्य और अभिनन्दनीय है लेकिन महंगाई और अन्य कारणों से पत्रिका को और आर्थिक सहयोग की जरूरत महसूस होती रहती है। इसलिए आप यथोचित सहयोग करते रहें। अगला अंक जनवरी-मार्च 2023 का होगा, जिसके लिए आलेख आमंत्रित हैं।

– डॉ. राजेश कुमार
उपसम्पादक